झुन्झुनूं जिले के स्थान–नामों में प्रयुक्त शब्दावली

डॉ.मुनेश कुमारी मीणा*

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी अपने व्यापक शब्द – भण्डार के कारण समृद्ध भाषा है हिन्दी भाषा के शब्द–भण्डार का निर्माण स्वदेशी एवं विदेशी दोनों भाषाओं के शब्दों से हुआ है। स्वदेशी भाषाओं में संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं से हिन्दी में अनेक शब्द दिये गये हैं। बंगला, मराठी, गुजराती प्रान्तीय भाषाओं के शब्द भी इसमें सम्मिलित है। विदेशी भाषाओं में फारसी, तुर्की, अरबी, अंग्रेजी और पुर्तगाली के नाम लिये जा सकते है इस प्रकार हिन्दी भाषा के शब्द – भण्डार में प्राचीन आर्य भाषाओं की तत्सम और तद्भव, देशी तथा विदेशी भाषाओं के शब्द उपलब्ध होते हैं।

हिन्दी भाषा का विकास संस्कृत से हुआ। जब संस्कृत साहित्य की भाषा थी, तब बोलचाल की भाषा प्राकृत थी। प्राकृत के बाद अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। मुख्य रूप से हिन्दी में दो प्रकार के शब्द प्रमुख हैं संस्कृत के शब्द के प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के माध्यम से रूप बदलते हुए हमारी बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त हो रहे शब्द हैं।

संस्कृत में शब्द हम ज्यों के त्यों लेते हैं वे तत्सम कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में सुंस्कृत के वे शब्द जो लिखित रूप में बिना परिवर्तन के प्रयोग में आते हैं। कुछ शब्द दिये गये है जिन्हें हिन्दी में संस्कृत से ज्यों के त्यों ले लिये गये जैसे : अग्नि, वायु, सुर्य, चन्द्रमा, पिपास, ग्राम, कार्य, दुग्ध आदि।

तत्सम्

अंगासर	(झुन्झुनूं)	अजारी कलां	(झुन्झुनूं)
अजारी खुर्द	(झुन्झुनूं)	आदर्श नगर	(झुन्झुनूं)
आबूसर	(झुन्झुनूं)	आलमपुरा	(चिड़ावा)
आर्यनगर	(झुन्झुनूं)	इन्द्रपुरा	(झुन्झुनूं)
उड़ीका	(चिड़ावा)	उड़की	(चिड़ावा)
कंवरपुरा	(चिड़ावा)	काकरेयू कलां	(झुन्झुनूं)
काजी	(चिड़ावा)	काजरा	(चिड़ावा)
काजला	(बुहाना)	काकड़ा	(बुहाना)
किरोड़ी	(बुहाना)	कूहाड़ वास	(बुहाना)
केशवा की ढ़ाणी	(नवलगढ़)	खयाली	(झुन्झुनूं)
खड़वासो की ढ़ाणी	(उदयपुरवाटी)	खागो का बास	(झुन्झुनूं)
खालसी	(झुन्झुनूं)	खोजास	(नवलगढ़)
गडानिया	(चिड़ावा)	गढ़ला खुर्द	(उदयपुरवाटी)
गढ़ला कलां	(उदयपुरवाटी)	गढ़वालो की ढ़ाणी	(नवलगढ़)
गणेश पुरा	(खेतड़ी)	गाडा खेड़ा	(बुहाना)
गादली	(बुहाना)	गुड़ा गोड़जी	(उदयपुरवाटी)
गोठ	(बुहाना)	गोठड़ा	(खेतड़ी)
गोठड़ा नूनिया	(चिड़ावा)	गोठड़ी	(चिड़ावा)
गोठड़ा लाम्बा	(चिड़ावा)	गोपाल पुरा	(चिड़ावा)
गोविन्दा पुरा	(झुन्झुनूं)	गोकल का बास	(चिड़ावा)
घसेड़ा	(बुहाना)	धीसा की ढ़ाणी	(नवलगढ़)
चन्द्रपुरा	(झुन्झुनूं)	चन्द्रपुरा	(झुन्झुनूं)
चंदाना	(चिड़ावा)	चारण की ढ़ाणी	(झुन्झुनूं)
चारावास	(खेतड़ी)	चारणवास सुल्तानपुर	(झुन्झुनूं)
चारणवासी	(झुन्झुनूं)	चारण की ढ़ाणी	(झुन्झुनूं)
चिराना	(नवलगढ़)	चिरानी	(खेतड़ी)
चुन्दाड़ा	(खेतड़ी)	धोराडी आथूनी	(झुन्झुनूं)
जवाहरपुरा	(झुन्झुनूं)	जयसिंह पुरा	(झुन्झुनूं)
जटवाली	(नवलगढ़)	जयसिंह पुरा	(झुन्झुनूं)
जीवन निवास	(बुहाना)	जीतास	(झुन्झुनूं)
झटावा खुर्द	(झुन्झुनूं)	झटावा कलां	(झुन्झुनूं)
टीबा	(खेतड़ी)	टोडी	(उदयपुरवाटी)
टोडपुरा	(खेतड़ी)	टोड़ा ढ़का की ढ़ाणी	(नवलगढ़)

तद्भव शब्द :–

हिन्दी भाषा में दूसरे प्रकार के बहुत से ऐसे शब्द हैं। जिनका उद्गम तो संस्कृत से ही है पर लम्बे समय से व्यवहार में आने के कारण उनमें परिवर्तन हो गया है। ऐसे शब्द तद्भव कहलाते हैं। 'तद्भव' में भी तत् का अर्थ है 'वह' अर्थात संस्कृत और 'भव' का अर्थ 'उत्पन्न' अर्थात तद्भव वे शब्द हैं जो संस्कृत से उत्पन्न हुए हैं। जैसे–घर (गृह) काम (कर्म) हाथ (हस्थ) हाथी (गज) आदि।

इसरपुरा	(झुन्झुनूं)	इलाखर की ढ़ाणी	(खेतड़ी)
इन्डाली	(झुन्झुनूं)	उत्तरासरमानपुरा	(झुन्झुनूं)
ओजटू	(चिड़ावा)	कबीरसर	(झुन्झुनूं)
कालियासर	(झुन्झुनूं)	कालियासर का बास	(झुन्झुनूं)

व्याख्याता(एस एफ.एस.), हिन्दी विभाग स्वामी विवेकानंद राजकीय महाविद्यालय, खेतड़ी

काली पहाड़ी	(झुन्झुनूं)	कालेडाली की ढ़ाणी	(झुन्झुनूं)
कासेरू	(नवलगढ़)	कालोटा	(खेतड़ी)
किराठ	(उदयपुरवाटी)	कुमास	(झुन्झुनूं)
कुरन्ड	(खेतड़ी)	केहरपुरा खुर्द	(चिड़ावा)
केरू	(नवलगढ़)	कोलिडा	(झुन्झुनूं)
खातीपुरा	(झुन्झुनूं)	खीदासर ग्रामीण	(झुन्झुनूं)
गुमानसर	(चिड़ावा)	गुमाना का बास	(उदयपुरवाटी)
गुजरवास	(बुहाना)	गोरधन पुरा	(बुहाना)
धडावा	(चिड़ावा)	धीरावाली की ढ़ाणी	(बुहाना)
चक नयोला	(झुन्झुनूं)	चकवास	(झुन्झुनूं)
चिमपनुरा	(झुन्झुनूं)	चिन्छोली	(झुन्झुनूं)
चुरीना	(बुहाना)	चुड़ी छतरपुरा	(झुन्झुनूं)
चौहान की ढ़ाणी	(चिड़ावा)	छनवाडा	(उदयपुरवाटी)
छावोसाड़ी	(उदयपुरवाटी)	जैतपुरा	(उदयपुरवाटी)
जैतपुर	(बुहाना)	जोशियान की ढ़ाणी	(झुन्झुनूं)
झेरली	(चिड़ावा)	टामकोर	(झुन्झुनूं)

देशज शब्द :–

देशज का शाब्दिक अर्थ है देश से उत्पन्न हुआ। प्रान्तीय भाषाओं और बोलियों से लिये गये अथवा आवश्यकतानुसार गढ़े गये शब्द देशज कहलाते है। साधारणतः जिन शब्दों के सम्बन्ध में निश्चित रूपसे उनके उद्‌गम के बारे में नहीं कहा जा सकता, उन्हें हम देशज शब्दों के वर्ग में रख लेते है। जैसे खिड़की, रद्‌दा, ढूढ़ना, खोट, पगड़ी, झाड़ झुग्गी आदि।

अलसीसर	(झुन्झुनूं)	अम्बेड़कर नगर	(झुन्झुनूं)
अशोक नगर	(झुन्झुनूं)	अगवाना खुर्द	(चिड़ावा)
अडुका	(चिड़ावा)	अरडावता	(चिड़ावा)
अख्तरपुरा	(चिड़ावा)	अगवाना कलां	(चिड़ावा)
अडवाना	(उदयपुरवाटी)	आसलवास	(चिड़ावा)
उदामंडी	(बुहाना)	उदावास	(झुन्झुनूं)
ककराना	(उदयपुरवाटी)	ककराय	(खेतड़ी)
कलगांव	(बुहाना)	कलाठड़ा	(बुहाना)
काकोडा	(चिड़ावा)	कांकरिया	(खेतड़ी)
काकड़ा	(बुहाना)	किरवाना	(चिड़ावा)
कुमावास	(नवलगढ़)	कोलाली	(झुन्झुनूं)
खरखड़ी	(झुन्झुनूं)	खरखड़ा	(खेतड़ी)

खाटकर	(नवलगढ़)	खीरपुरा	(उदयपुरवाटी)
खिरोर	(नवलगढ़)	खुड़िया	(चिड़ावा)
खुडाना	(चिड़ावा)	खेड़ला	(चिड़ावा)
खेतड़ी	(खेतड़ी)	खेजड़ा की ढ़ाणी	(चिड़ावा)
गाडराटा	(खेतड़ी)	गांगियासर	(झुन्झुनूं)
गोरीर	(खेतड़ी)	गोदो का बास	(झुन्झुनूं)
घरडाना खुर्द	(बुहाना)	घरडाना कलां	(बुहाना)
धोड़ी बाड़ खुर्द	(नवलगढ़)	घोड़ी बाड़ा कलां	(नवलगढ़)

अर्द्ध तत्सम् –

इसके अन्तर्गत वे शब्द आते हैं जो पूरी तरह तत्सम् नहीं होते हैं। जैसे : कृष्ण तत्सम् है परन्तु 'किशन' अर्द्ध – तत्सम् है इसी प्रकार कासम, कारज अर्द्ध तत्सम् है इसके तत्समरूप कर्म व कार्य हैं, अर्द्ध तत्सम शब्द है जो पालि, प्राकृत, अपभ्रंश होते है, बल्कि जो हिन्दी काल में संस्कृत से मूलतः तत्सम् रूप लिए गए हैं।

आभदपुरा	(झुन्झुनूं)	खांदवा	(बुहाना)
जालिमपुरा	(झुन्झुनूं)	जालिमपुरा की ढ़ाणी	(झुन्झुनूं)
पंथारिया	(चिड़ावा)	पथाना	(झुन्झुनूं)
पीथूसर	(झुन्झुनूं)		

विदेशी (अरबी/फारसी) किसी भी अन्य भाषा से आए हुए शब्द उस भाषा के लिए प्रायः विदेशी होते है। 'विदेशी' शब्द का मूल अर्थ है अन्य देश से आए हुए शब्द जैसे कागज, पुलिस, तारीख, नशा, दवा, मेज, कूपन आदि।

इस्लामपुर	(झुन्झुनूं)	इस्माइलपुरा	(चिड़ावा)
इस्कपुरा	(बुहाना)	इस्माईलर	(बुहाना)
केडविथ गोपालपुरा	(उदयपुर)	केमरी की ढ़ाणी	(नवलगढ़)
फूसखानी	(झुन्झुनूं)	लड़ी का बास	(बुहाना)
लुमास	(झुन्झुनूं)	वाहिदपुर	(झुन्झुनूं)
शेखपुरा	(चिड़ावा)	शेपहर गुनवाड़ा	(खेतड़ी)
शेखसर	(झुन्झुनूं)	हमीनपुरा	(चिड़ावा)

संकर– हिन्दी में बहुत से शब्द हैं जो उपर्युक्त वर्गो में किन्ही भी दो या अधिक योग से बने हैं इन्हें संकर या द्विज कहते हैं जैसे : रेलगाड़ी (अंग्रेजी,हिन्दी) डाकखाना (हिन्दी,फारसी) आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि झुन्झुंनू जिले के गॉवों के नामोल्लेख में तत्सम, तद्‌भव, देशज और विदेशी आदि सभी प्रकार के व्याकरणिक शब्द देखने को मिलते हैं। इन सब के अतिरिक्त संकर शब्दों के आधार पर भी गॉवों के नाम देखने को मिल जाते हैं।